# फ्रोबेल के शैक्षिक चिन्तन का मूल्यांकन
## (Evaluation of Educational Thought of Froebel)

फ्रोबेल की दृष्टि में शिक्षा बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को बाहर निकालती है, इसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों (Potentialities) का विकास किया जाता है, उनकी इन्द्रियों और बुद्धि का विकास किया जाता है। उनके शब्दों में—'शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है।'

साफ जाहिर है कि फ्रोबेल ने शिक्षा को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है और मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों को बाहर प्रकट करने के साधन के रूप में स्वीकार किया है। इस सन्दर्भ में पहली बात तो यह है कि इन्होंने इस प्रक्रिया के स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया है और दूसरी बात यह है कि सब कुछ अन्दर से बाहर निकालने की बात भी अपने में सही नहीं है। मनुष्य के अन्दर सीखने की शक्ति है, सीखता तो वो वह है जो उसे सिखाया जाता है और जो बाहर है।

फ्रोबेल की दृष्टि से शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों को अपने दैवी स्वरूप और संसार की आत्मिक एकता का ज्ञान कराना है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उनका शारीरिक एवं बौद्धिक विकास करना, उन्हें सामाजिक एवं नैतिक व्यवहार में प्रशिक्षित करना, उनका चारित्रिक विकास करना और उन्हें पवित्र जीवन जीने की ओर अग्रसर करना आवश्यक है।

यदि फ्रोबेल द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यानपूर्वक देखा-समझा जाए तो स्पष्ट होगा कि इनमें मनुष्य के आध्यात्मिक उद्देश्य ही समाहित हैं, भौतिक उद्देश्य नहीं। और आज शिक्षा द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर बल दिया जाता है। फिर बच्चों को अपने दैवी स्वरूप का ज्ञान कराने की बात तो एक दिवास्वप्न ही कही जाएगी।

Scanned with CamScanner

फ्रोबेल ने मूलरूप से बच्चों की शिक्षा की पाठ्यचर्या के निर्माण के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए है। इन्होंने बच्चों की शिक्षा की पाठ्यचर्या के निर्माण के चार सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया—पहला यह है कि पाठ्यचर्या के विषय एवं क्रियाओं का चयन बच्चों की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के आधार पर किया जाए दूसरा यह है कि पाठ्यचर्या के समस्त विषयों एवं क्रियाओं में आपसी सम्बन्ध हो। तीसरा यह कि पाठ्यचर्या ऐसी हो जिसे क्रियाओं द्वारा पूरा किया जा सके। और चौथा यह कि पाठ्यचर्या मनुष्य के विकास सिद्धान्त पर आधारित होनी चाहिए। फ्रोबेल ने अपने इन सिद्धान्तों के आधार पर 4 वर्ष से 8 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्माण किया और उसमें इन्होंने प्रकृति निरीक्षण, खेल-कूद एवं धर्म शिक्षा को विशेष स्थान दिया और भाषा, गणित एवं विज्ञान को गौण स्थान दिया। इन्होंने स्पष्ट किया कि प्रकृति निरीक्षण के दौरान जो भौगोलिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान विकसित किया जा सकता हो, वह भी करा देना चाहिए परन्तु किसी भी दशा में वह बच्चों के अपने जीवन से सम्बन्धित होने तक सीमित रहना चाहिए।

इसमें दो मत नहीं हैं कि शिशुओं की शिक्षा की पाठ्यचर्या शिशुओं की रुचि एवं क्षमताओं के अनुसार होनी चाहिए और वह ऐसी होनी चाहिए कि उसे खेल-खेल में क्रियाओं द्वारा विकसित किया जा सके, परन्तु प्रारम्भ से धर्म की शिक्षा और वह भी ईसाई धर्म की शिक्षा आज किसी को मान्य नहीं हो सकती, धर्म की वास्तविक शिक्षा तो बच्चे अपने परिवारों में प्राप्त करते हैं।

फ्रोबेल के शिक्षण सम्बन्धी विचार भी शिशु शिक्षा तक सीमित हैं। इन्होंने स्वयं करके, स्वयं सीखने पर बल दिया है। इन्होंने इस बात पर भी बल दिया है कि बच्चों को अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार बढ़ने के स्वतन्त्र अवसर प्रदान करने चाहिए। ये सारे गुण खेल विधि (Play Way Method) में पाए जाते हैं इसलिए फ्रोबेल ने इस स्तर पर खेल द्वारा स्वाभाविक रूप से सीखने पर बल दिया है। इसके अतिरिक्त आत्मक्रिया द्वारा सीखने, सहयोग द्वारा सीखने और वस्तुओं द्वारा सीखने पर बल दिया है। पर शिक्षण के इन सिद्धान्तों के आधार पर फ्रोबेल ने जिस **किण्डर गार्टन प्रणाली** का विकास किया है उसके भी अपने गुण-दोष हैं। यहाँ उन पर प्रकाश डालना आवश्यक है। अस्तु।

## किण्डर गार्टन प्रणाली के गुण

किण्डर गार्टर प्रणाली 4 वर्ष से 8 वर्ष के बच्चों की शिक्षा के लिए एक अच्छी प्रणाली है। पारकर महोदय ने इसे उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे महत्त्वपूर्ण शैक्षिक सुधार माना है। यूँ अब तक के वर्णन से इस प्रणाली की विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं फिर भी उन्हें क्रमबद्ध रूप से दोहरा देना अच्छा है।

**1. आध्यात्मिक आधार** — फ्रोबेल आदर्शवादी थे। ये बच्चों को प्रारम्भ से ही विश्व की अनेकता में छिपी एकता (ईश्वर) की अनुभूति कराना चाहते थे। इन्होंने उपहारों का निर्माण इसी आधार पर किया है। किण्डर गार्टन विद्यालय का शुभारम्भ ईश प्रार्थना से करने एवं बच्चों को नैतिक कहानियाँ सुनाने के पीछे इनका यही उद्देश्य था।

**2. आत्मक्रिया पर बल** — फ्रोबेल का विश्वास था कि मनुष्य के अन्दर समस्त ज्ञान छिपा हुआ है, शिक्षक का कार्य उसे उजागर करना है। किण्डर गार्टन विद्यालयों में बच्चों को ऐसा पर्यावरण दिया जाता है कि बच्चे स्वयं सचेत होते हैं, स्वयं सीखते हैं।

**3. मनोवैज्ञानिक आधार** — यह प्रणाली स्वतन्त्रता, आत्मक्रिया और खेल द्वारा शिक्षा के सिद्धान्तों पर आधारित है, इस प्रकार इसमें शिक्षण के दो मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों—रुचि का सिद्धान्त और क्रिया का सिद्धान्त का पालन किया जाता है। यह शिक्षण की मनोवैज्ञानिक एवं प्रभावशाली विधि है।

**4. स्वक्रिया पर बल** — इस विधि में बच्चे, खेल और उपहारों के माध्यम से स्वयं सीखते हैं और व्यापारों का सम्पादन स्वयं करते हैं। स्वयं करके सीखा हुआ ज्ञान स्थाई होता है।

**5. महिला शिक्षिकाएँ** — किण्डर गार्टन स्कूलों में केवल महिलाओं को ही शिक्षक नियुक्त किया जाता है और उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों के साथ मातृतुल्य व्यवहार करें। इन स्कूलों में बच्चों को दण्ड नहीं दिया जाता, बच्चों के साथ प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाता है।

Scanned with CamScanner

**6. विद्यालय आकर्षण के केन्द्र** — किण्डर गार्टन स्कूलों में बच्चों के बैठने के लिए उचित भवन व फर्नीचर होता है; खेलने के लिए उचित सामग्री व स्थान होता है, उनकी अपनी क्रियात्मक प्रवृत्ति के प्रकाशन के लिए अनेक प्रकार के उपहार और व्यापार होते हैं, मातृतुल्य शिक्षिकाएँ होती हैं, किसी प्रकार का कोई भय नहीं होता, परिणामतः वे बच्चों के लिए आकर्षण के केन्द्र होते हैं।

**7. इन्द्रियों द्वारा शिक्षण** — इस प्रणाली में सर्वप्रथम बच्चों की इन्द्रियों को अपनी क्रियाओं में प्रशिक्षित किया जाता है और फिर इनके माध्यम से समस्त ज्ञान एवं क्रियाओं का विकास किया जाता है। इन्द्रियों द्वारा सीखा ज्ञान एवं क्रियाएँ स्पष्ट एवं स्थायी होते हैं।

**8. स्वाभाविक विकास के अवसर** — इस प्रणाली में बच्चों को बच्चा ही समझा जाता है, छोटा प्रौढ़ नहीं; उन्हें अपने स्वाभाविक विकास के स्वतन्त्र अवसर प्रदान किए जाते हैं।

**9. सामाजिक गुणों का विकास** — इस प्रणाली में बच्चे सामूहिक क्रियाओं में भाग लेते हैं, सामूहिक खेल खेलते हैं, सामूहिक रूप से व्यापारों का सम्पादन करते हैं और एक-दूसरे के सहयोग से कार्यों को पूरा करते हैं। इससे उनमें सामाजिक गुणों का विकास होता है।

**10. सौन्दर्य भावना का विकास** — इस प्रणाली में बच्चे प्रकृति निरीक्षण करते हैं, बागवानी करते हैं, गीत गाते हैं और अभिनय करते हैं। इन सब क्रियाओं से उनकी सौन्दर्य भावना का विकास होता है।

**11. रचनात्मक शक्तियों का विकास** — इस प्रणाली में बच्चे विभिन्न उपहारों की सहायता से विभिन्न आकृतियाँ बनाते हैं और अनेक रचनात्मक कार्यों (व्यापारों) को करते हैं। इससे उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास होना स्वाभाविक है।

## किण्डर गार्टन प्रणाली के दोष

यह प्रणाली एक अच्छी प्रणालो अवश्य है परन्तु दोषों से मुक्त नहीं है। इसमें निम्नलिखित दोष हैं—

**1. आध्यात्मिक विकास पर अत्यधिक बल** — इस प्रणाली में बच्चों के आध्यात्मिक विकास पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाता है। ईश प्रार्थना के बाद धर्म एवं नीति पर चर्चा, भला छोटे-छोटे बच्चे क्या समझेंगे। 27 घन अथवा 27 आयताकार ठोसों से एक घन का निर्माण कराकर अनेकत्व में एकत्व के सम्प्रत्यय को स्पष्ट करने का प्रयास भी हास्यास्पद है।

**2. पूर्ण स्वतन्त्रता का अभाव** — यूँ यह प्रणाली स्वतन्त्रता के सिद्धान्त पर बनाई गई है परन्तु व्यावहारिक रूप में बच्चों को स्कूल की समय सारिणी के अनुसार कार्य करना होता है। फिर वे उपहार व व्यापारों से इस प्रकार बाँध दिए जाते हैं कि अपनी इस दुनियाँ में ही बँध कर रहे जाते हैं।

**3. खेल, उपहार एवं व्यापारों की अधिकता** — विद्यालयों के कार्यों को खेल भावना से करना एक बात है और खेलों को खेलने में जो कुछ सीखा जा सके वह सीखना दूसरी बात है। फ्रोबेल ने अपनी इस प्रणाली के लिए आवश्यकता से बहुत अधिक उपहारों का निर्माण एवं व्यापारों का चयन किया है। अधिकता अरुचि पैदा करती है।

**4. खेल गीत अरुचिकर** — फ्रोबेल ने जिन खेल गीतों का निर्माण किया है उनमें भी ताल और लय का अभाव है; न बच्चे उन्हें स्मरण कर पाते हैं और न उन्हें गा पाते हैं। गीतों सम्बन्धी चित्र भी भद्दे हैं।

**5. कुछ उपहार भी अनुपयुक्त** — फ्रोबेल ने अपनी शिक्षण प्रणाली के लिए जिन उपहारों का निर्माण किया है उनमें से कुछ बड़े अटपटे हैं। फिर आज के इलेक्ट्रोनिक युग में बच्चों की उनमें कोई रुचि भी नहीं होती।

**6. ज्ञान व क्रियाओं में एकीकरण का अभाव** — इस प्रणाली में ज्ञान एवं क्रियाओं को एक इकाई के रूप में बाँधने का कोई प्रयत्न नहीं किया जाता। परिणामतः विभिन्न पाठ्य विषयों एवं क्रियाओं में सहसम्बन्ध नहीं हो पाता है।

Scanned with CamScanner

**7. आत्मनिर्भरता का अभाव** — इस प्रणाली में बच्चे प्रायः सभी कार्यों को सामूहिक रूप से करते हैं इसलिए वे आत्मनिर्भर नहीं हो पाते।

**8. वैयष्टिक विकास का अभाव** — इस प्रणाली में बच्चों की वैयष्टिक भिन्नता का ध्यान नहीं रखा जाता, सभी बच्चों को समान कार्य करने होते हैं। परिणामतः बच्चों का वैयष्टिक विकास नहीं हो पाता।

**9. व्यय साध्य** — इस प्रणाली में प्रयोग होने वाले खेल, उपहार और व्यापारों पर एक बड़ी धनराशि व्यय करनी होती है। अपने देश में शिक्षा की इतनी खर्चीली प्रणाली को जनसाधारण की शिक्षा के लिए नहीं अपनाया जा सकता।

फ्रोबेल आन्तरिक अनुशासन को महत्त्व देते थे। इनका तर्क था कि किसी भी प्रकार के बन्धन से आत्मानुशासन की भावना विकसित नहीं की जा सकती, इसके लिए स्वतन्त्र वातावरण चाहिए। पर यह स्वतन्त्रता आत्मनियन्त्रित होनी चाहिए।

साफ जाहिर है कि फ्रोबेल बालक को सीमित और नियमानुकूल स्वतन्त्रता देने के पक्ष में हैं। आज के शिक्षाविद् तो स्वतन्त्रता और अनुशासन को एक ही क्रिया के दो पक्ष मानते हैं।

फ्रोबेल ने शिक्षक की उपमा माली से दी है। उनके अनुसार शिक्षक रूपी माली का कार्य विद्यालय रूपी बाग के विद्यार्थी रूपी पेड़-पौधों की देखभाल करना है, उनका उचित विकास करना है। फ्रोबेल के अनुसार महिला शिक्षक शिशुओं की उचित देखभाल कर सकती है इसलिए शिशु विद्यालयों में महिलाओं को ही नियुक्त किया जाना चाहिए। फ्रोबेल इनसे यह अपेक्षा करते थे कि ये बच्चों के साथ मातृतुल्य व्यवहार करें और उन्हें किसी प्रकार का कोई दण्ड न दें। पीटना तो दूर, शिक्षिकाएँ बालक को डाटें-फटकारें भी नहीं।

लोकतन्त्र एवं मनोविज्ञान की दृष्टि से यह उपयुक्त है, लेकिन यदि कोई बालक अनुचित कार्य या व्यवहार करे तो उसे नियन्त्रित करना भी आवश्यक होता है।

फ्रोबेल शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र मानते थे। ये शिशुओं की पूरी शिक्षा का विधान उनकी योग्यता, क्षमता, रुचि और आवश्यकतानुसार करने पर बल देते थे।

फ्रोबेल की यह बात तो सही है कि शिशुओं की शिक्षा उनकी योग्यता एवं क्षमता के आधार पर होनी चाहिए और उन्हें स्वतन्त्रता देनी चाहिए परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य मूलतः एक पशु है। अतः शिशुओं को उनके मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार से समाज सम्मत व्यवहार की ओर अग्रसर करने के लिए शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के साथ-साथ समाज की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को भी सामने रखना चाहिए।

फ्रोबेल के अनुसार विद्यालय आकर्षण के केन्द्र होने चाहिए। फ्रोबेल ने शिशु विद्यालयों को किण्डर गार्टन की संज्ञा दी है जहाँ शिक्षक रूपी माली बच्चों रूपी पेड़-पौधों की देखभाल करते हैं और उनके स्वाभाविक विकास में सहायक होते हैं। इन्होंने किण्डर गार्टन स्कूलों में बच्चों के बैठने के लिए उचित भवन और फर्नीचर, खेलने के लिए उचित सामग्री व स्थान, क्रियात्मक प्रवृत्ति के प्रकाशन के लिए अनेक उपहार और व्यापार का होना आवश्यक बताया है और मातृतुल्य शिक्षिकाओं का होना आवश्यक बताया है।

फ्रोबेल के उपरोक्त विचारों से कौन असहमत होगा, परन्तु अति किसी भी चीज की बुरी होती है। किण्डर गार्टन में जिन साधनों का होना आवश्यक होता है वे इतने अधिक हैं कि उनके प्रयोग में बच्चों को आकर्षण के स्थान पर विकर्षण होने लगता है। इसी दृष्टि से किसी भी विचार अथवा क्रिया को उसी सीमा तक अपनाना चाहिए जहाँ तक उसका आकर्षण बना रहे और वह लाभकर हो।

फ्रोबेल ने केवल शिशु शिक्षा के क्षेत्र में चिन्तन एवं कार्य किया है फिर भी उनके चिन्तन एवं कार्य प्रणाली से यह बात स्पष्ट होती है कि वे जन शिक्षा के पोषक थे, लड़के-लड़कियों की शिक्षा में कोई अन्तर नहीं करते थे और धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बहुत बल देते थे।

शिक्षा के अन्य पक्षों पर विस्तार से विचार न करने के कारण उनके शैक्षिक चिन्तन को अपूर्ण ही कहा जाएगा। व्यावसायिक शिक्षा की तो उन्होंने कहीं चर्चा ही नहीं की है। करते भी कैसे, यह कार्य तो उच्च शिक्षा स्तर पर किया जाता है। पर धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर इतना अधिक बल और वह भी शिशु शिक्षा स्तर पर आज के युग में मान्य नहीं हो सकता।

Scanned with CamScanner

## फ्रोबेल का प्रभाव

फ्रोबेल ने मूल रूप से शिशु शिक्षा के सम्बन्ध में विचार अभिव्यक्त किए हैं और शिशुओं के शिक्षण के लिए ही खेल विधि पर आधारित किण्डर प्रणाली का विकास किया है, पर इस क्षेत्र में उनका इतना अधिक योगदान है कि वे शिक्षा जगत के मसीहा के रूप में जाने जाते हैं, खेल विधि के आविष्कारक के रूप में जाने जाते हैं। आज संसार के प्रायः सभी देशों में किण्डर गार्टन प्रणाली के विद्यालय स्थापित हैं, इनमें बच्चों को खेल-खेल में सिखाया-पढ़ाया जाता है।

## उपसंहार

मनुष्य अपनी परिस्थितियों की उपज होता है, यह बात दूसरी है कि कोई मनुष्य परिस्थिति के अनुकूल विकसित होता है और कोई प्रतिकूल। फ्रोबेल एक पादरी के पुत्र थे, इसलिए इनमें प्रारम्भ से ही धार्मिक संस्कारों का विकास हो गया। जब ये केवल 9 माह के थे इनकी माता का स्वर्गवास हो गया और विमाता ने इन्हें वह प्रेम नहीं दिया जो एक माता देती है, यही कारण है कि ये मातृप्रेम के महत्त्व को गहराई से समझ सके। इनके उन दो वर्षों ने जो इन्होंने वन रक्षक के साथ बिताए थे, इन्हें अनकेत्व में एकत्व की अनुभूति करा दी। उस समय ही इन्हें मनुष्य की मूलभूत अन्तर्निहित बीज शक्ति का ज्ञान हुआ और साथ ही उसके विकास के सन्दर्भ में उचित वातावरण (देखभाल) के महत्त्व का ज्ञान हुआ। मूल रूप से इन्हीं अनुभवों एवं संस्कारों पर इनका जीवन दर्शन और शैक्षिक चिन्तन आधारित है। इन्होंने बच्चों की शिक्षा को जिन सिद्धान्तों पर आधारित करने की बात कही है उनसे आज के अधिकांश शिक्षाविद् सहमत हैं परन्तु किण्डर गार्टन में इतने अधिक साधन एवं उपहारों का प्रयोग आलोचना का विषय है। यही कारण है कि संसार के लगभग सभी देशों में किण्डर गार्टन प्रणाली के सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए किण्डर गार्टन स्कूल तो स्थापित किए गए हैं परन्तु उनमें प्रयोग की जाने वाली सामग्री (कहानियों, खेलों, मातृखेलों एवं शिशु गीतों, उपहारों और व्यापारों) को अपने-अपने तरीकों से विकसित किया गया है और अपने-अपने तरीकों से उनका प्रयोग किया जाता है। पर इसके लिए मूल आधार तो फ्रोबेल ने ही दिया था। संसार के समस्त देशों में किण्डर गार्टन प्रणाली के शिशु विद्यालयों का होना और उनमें खेल विधि द्वारा शिक्षा करना फ्रोबेल की महानता को सिद्ध करता है। शिशुओं के दैवी स्वरूप को पहचानने वाले इस शिशु विशेषज्ञ का पूरा संसार चिर ऋणि रहेगा और खेल विधि के आविष्कारक के रूप में ये सदैव स्मरण रहेंगे।

Scanned with CamScanner